In a Noble Gesture, Pandit Shriram Sharma Acharya Renounced All Copyright on His Books

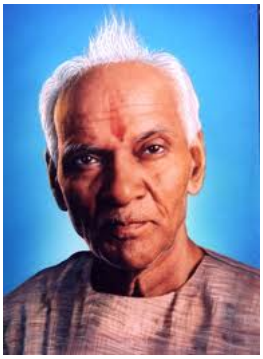

The God-realised sage Pandit Shriram Sharma Acharya, while he was still present in his physical body, renounced all copyright on his writings (books, magazine articles etc.) He did so, because he fervently wished for the life-giving thoughts of Vedanta to spread freely in society and to be available to each and every person who wished to access them. Such was his nobility, tremendous love and concern for the spiritual well-being of humanity. His works thus today belong to the public domain.

"शान्तिकुञ्ज की युग निर्माण योजना द्वारा युग- साहित्य इन्हीं दिनों सृजा गया है। जिसका मूल्य प्राय: कागज, स्याही जितना ही रखा गया है। कॉपीराइट भी किसी का नहीं है। कोई भी छाप सकता है।"

- Pandit Shriram Sharma in the book, "Shiksha Hi Nahi Vidya Bhi", page 12

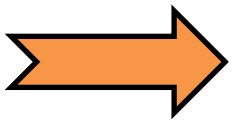

९२ शिक्षा ही नहीं विद्या भी

सत्साहस भी उन्हीं प्राणवान व्यक्तित्वों का काम देता है, जो न केवल प्रखर प्रतिभा से संपन्न हो, वरन् सामयिक उलझनों के समाधान का भी व्यावहारिक स्वरूप प्रस्तुत करते हैं।

शांतिकुंज की युग निर्माण योजना द्वारा युग साहित्य इन्हीं दिनों सृजा गया है, जिसका मूल्य प्राय: कागज स्याही जितना ही रखा गया है। कापीराइट भी किसी का नहीं है। कोई भी छाप सकता है। इसी प्रकार सत्संग के लिए भी एक सीमित परिधि की विचारधारा निर्धारित की गई है। प्रवचनों में भी सीमित विचारों को गहराई तक उतार देने पर ही बात बनती है, अन्यथा सड़कों पर मजमा लगाने वाले भी कुछ न कुछ बकझक करते और भीड़ जमा कर लेते हैं। ऐसी बकवास को सुनना भी भारी पड़ता है, क्योंकि उससे उल्टा और अहितकर चिंतन भी गले बँध सकता है।

सत्संग के दो पक्ष हैं—एक गायन दूसरा प्रवचन। यों इन दोनों की आवश्यकता पूरी करने वाली सस्ती पुस्तिकाएँ छाप दी गई हैं, पर जिनको और अधिक सरसता चाहिए उनके लिए वीडियो टेप तैयार कर दिए गए हैं। इनमें सूत्र संचालक के प्रवचन, माता जी के गायन और देव कन्याओं के सहकीर्तन सम्मिलित हैं। एक टेप ऐसा भी है जिसमें युग परिवर्तन के मूलभूत सिद्धांतों को संक्षिप्त एवं सरल सुबोध ढंग से समाविष्ट कर दिया है। यह टेप शांतिकुंज में उपलब्ध हैं, जिन्हें कोई भी अपने टेप रिकार्डर पर बजा कर एकत्रित लोगों के बीच युग प्रवक्ता की, युग गायक की भूमिका निभा सकता है। युग चेतना के प्रचार-विस्तार का यह भी एक सरल तरीका है।

विद्या विस्तार के लिए साहित्य और वाणी दोनों का उपयोग व्यापक रूप से किया जाना है। ज्ञान रथ, साइकिल यात्राएँ सद्वाक्य लेखन, झोला पुस्तकालय, सत्संग, दीपयज्ञ आदि के माध्यम से सृजनशिल्पी हर क्षेत्र में युग चेतना का विस्तार करने के लिए कटिबद्ध होकर जुट पड़ें—ऐसा माहौल बन रहा है। निर्धारित सीमित

" जैसे श्रवण कुमार ने अपने माता- पिता को सभी तीर्थों की यात्रा कराई, वैसे ही आप भी हमें (विचार रूप में) संसार भर के तीर्थ, प्रत्येक गाँव, प्रत्येक घर में ले चलें। हमारे विचार क्रान्ति के बीज हैं, जो अगले दिनों धमाका करेंगे। तुम हमारा काम करो, हम तुम्हारा काम करेंगे।"

- Pandit Shriram Sharma